International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-10-2025, Accepted: 26-11-2025, Published: 11-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 130-133

महाश्वेता देवी की 'स्तनादायिनी'– साहित्यिक विश्लेशण

डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय, के. नारायणपुरा, बैंगलोर, कर्नाटक, भारत

सारांश
महाश्वेता देवी का उपन्यास "स्तनदायिनी" भारतीय समाज की जाति, वर्ग, और स्त्री शोषण की गहराइयों को उजागर करता है। यह कहानी केवल एक स्त्री की नहीं, बल्कि पूरे समाज की असमानता, नैतिक पतन और पितृसत्ता के विरोध का प्रतीक है। उपन्यास की नायिका जशोदा , जो एक दाई के रूप में पूरे परिवार को पालती है, अंततः उसी व्यवस्था की शिकार बन जाती है जिसके लिए उसने अपना जीवन समर्पित किया। यह शोध लेख महाश्वेता देवी के लेखन में स्त्री की पीड़ा, वर्ग–संघर्ष, और सामाजिक यथार्थ की पड़ताल करता है।

मूल शब्दः महाश्वेता देवी, स्तनदायिनी, स्त्री विमर्श, सामाजिक यथार्थ, वर्ग–संघर्ष, पितृसत्ता, नारी मुक्ति

महाश्वेता देवी (1926–2016) आधुनिक भारतीय साहित्य की उन लेखिकाओं में से हैं जिन्होंने साहित्य को सामाजिक आंदोलन का स्वर दिया। "स्तनदायिनी" उनकी प्रमुख कहानियों में से एक है, जो 1970 के दशक में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी स्त्री के श्रम, त्याग और समाज में उसकी उपयोगितावादी स्थिति का तीखा चित्रण करती है।

इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह दिखाती हैं कि किस तरह समाज एक स्त्री के शरीर को केवल 'सेवा' और 'उत्पादन' के उपकरण के रूप में देखता है।

उद्देश्य और शोध का महत्व

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित है

1. महाश्वेता देवी की "स्तनदायिनी" में निहित स्त्री–शोषण और सामाजिक संरचना का विश्लेषण।
2. जशोदा के चरित्र के माध्यम से स्त्री की सामाजिक स्थिति की पहचान।
3. उपन्यास में वर्ग और श्रम के यथार्थ को समझना।
4. भारतीय नारीवादी साहित्य में "स्तनदायिनी" की प्रासंगिकता को उजागर करना।

अनुसंधान की प्रकृति

यह शोध गुणात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है।

इसमें साहित्यिक, सामाजिक और नारीवादी दृष्टिकोण से महाश्वेता देवी के उपन्यास "स्तनदायिनी" का अध्ययन किया गया है।

शोध का उद्देश्य मात्र कथानक की व्याख्या करना नहीं, बल्कि कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त वर्ग, लिंग और श्रम आधारित असमानताओं की आलोचनात्मक पड़ताल करना है।

अनुसंधान की रूपरेखा

यह अध्ययन साहित्यिक समाजशास्त्र और स्त्रीवादी आलोचना के ढाँचे पर आधारित है।

इसमें निम्नलिखित चरणों का पालन किया गया

1. स्तनदायिनी" के मूल बंगाली और हिंदी अनुवाद दोनों का अध्ययन।
2. उपन्यास की पात्र संरचना, प्रतीक, और सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण।
3. स्त्री विमर्श के सैद्धांतिक ढाँचे का उपयोग (Simone de Beauvoir] Gayatri Spivak, Judith Butler आदि)।
4. द्वितीयक स्रोतों जैसे लेख, समीक्षाएँ और शोध–पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. निष्कर्ष तैयार करने हेतु विषयानुसार व्याख्या और विश्लेषण।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन पाठ–विश्लेषणात्मक पर आधारित है।पाठ के भीतर उपस्थित प्रतीकों, संवादों, और परिस्थितियों की व्याख्या के माध्यम सेसमाज की असमान संरचना, स्त्री के श्रम, और मातृत्व के विडंबनात्मक पहलुओं को उभारने का प्रयास किया गया है।

इसके अतिरिक्त, शोध में तुलनात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है —

जिसके अंतर्गत महाश्वेता देवी के अन्य स्त्री–केंद्रित कार्यों (द्रौपदी, रुदाली) की तुलना "स्तनदायिनी" से की गई है।

भारतीय संदर्भ में एक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण लेखिका, महाश्वेता देवी एक दुर्लभ चिंतक हैं जिन्हें इस देश ने देखा है, बंगाल की एक प्रतिभा, पूर्वोत्तर भारत की अंतरात्मा और राष्ट्रवाद का एक उज्ज्वल घर हैं। यह इतिहास है कि उन्होंने ऐसी कथाएँ बनाई हैं जो राष्ट्रवाद की कथा का पुनर्निर्माण करती हैं। वे अपने साहित्यिक जगत में ऐसे कई समुदायों को लाए हैं जिनकी इस तरह के इतिहास तक पहुंच नहीं थी। उनके लिए, साहित्य की जिम्मेदारी का अर्थ था, "उनका साहित्य, जो नैतिकता को तोड़ने के लिए निश्चित था, आज सार्वभौमिक है।[1] महाश्वेता देवी मौखिक इतिहास, लोककथाओं और लोक ज्ञान में विश्वास रखती थीं। देश की सबसे साहसी महिलाओं में से एक झांसी रानी का उनका चित्रण लोगों के साथ उनकी बातचीत से प्रेरित है। वह इस तरह के वैकल्पिक इतिहास का प्रयास करने वाली पहली लेखिका और कार्यकर्ता थीं।

नारी की अवधारणा को पुरुष समाज द्वारा उसकी धारणा के अनुसार परिभाषित किया जाता है। हालाँकि यह सच है कि संस्कृति और प्रकृति में अंतर है, लेकिन पुरुष समाज, जो महिलाओं के लिए प्राथमिक कार्य के रूप में बाल–पालन को लागू करता है, ने महिलाओं को प्रकृति के बराबर माना है। इस प्रकार, स्त्री को प्रकृति या उसकी अपनी प्रकृति का साथी कहकर, प्रकृति की गुणवत्ता की तुलना स्त्री से करके, जो पुरुष की प्रकृति से बाहर है, उस गुण को स्त्री की प्रकृति का एक हिस्सा माना जाता है।

इसी तरह विज्ञान को पुरुष और प्रकृति को स्त्री माना जाता है। इसकी व्याख्या पुरुष तर्कसंगतता और महिला तर्कहीनता के रूप में भी की जाती है। इसी तरह फ्रायड का कहना है कि यौन अभिव्यक्ति में पुरुष को गतिशील और महिला को सहिष्णु कहा जाता है। हालांकि, पारंपरिक रूप से, लैंगिक राजनीति की प्रणाली को महिला को गतिशील से छिपाकर और केवल पुरुष को ऊपर उठाकर बढ़ावा दिया जा रहा है। इस प्रकार, पुरुष–महिला की अवधारणा समाज की पुरुष संस्कृति की द्विभाजन पैदा करती है। पारंपरिक प्रणाली ने पुरुष और महिला के बीच लिंग की गलत व्याख्या करके महिला की व्याख्या को अलग किया है।

महिलाओं की अनुपस्थिति भी आधुनिक मानव इतिहास में प्रगति की प्रकृति पर अधिक से अधिक अधिकार की कहानी है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रकृति को अलग करने वाली महिला को भी विज्ञान के युग के नए नियमों के अधीन होना पड़ता है। अन्य क्षेत्रों में भी महिलाएं और प्रकृति एक–दूसरे के प्रतीक हैं। प्रकृति को मां के रूप में देखा जाता है। इस तरह से इस तरह का व्यक्तित्व एक महिला को अलौकिक बनाता है और उसे एक पूजनीय स्थिति में ले जाता है। यह एक ऐसी महिला को छुपाती है जो एक पुरुष है जो वास्तविक जीवन में कठिनाइयों का अनुभव करती है। और फिर उसका जीवन गायब हो जाता है।[3].

जबकि पारंपरिक परिवारों में, पुरुष को शक्ति के केंद्र में देखा जाता है, महिला को परिवार में एक शक्तिहीन व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। पारंपरिक मूल्य पुरुष को शक्ति के रूप में परिभाषित करते हैं और महिला को शक्तिहीन। हर कोई इस बात से सहमत है कि यह एक पूर्वकल्पित धारणा है। जब से पितृसत्तात्मक परिवार प्रणाली अस्तित्व में आई है, तब से दुनिया भर में सभी जातियों में महिलाओं को अवमानना, शोषण और हिंसा का सामना करना पड़ा है।

पुरुष प्रधान व्यवस्था में पुरुष शक्ति का प्रतीक है। स्वामी को सक्षम माना जाता है, पति जिम्मेदार होता है। लेकिन महिलाओं पर अक्षमता, कम काम करने की क्षमता और कौशल की कमी का आरोप लगाकर, वे पुरुष वर्चस्व की लैंगिक राजनीति में योगदान दे रही हैं।

परिवार में महिलाओं की बड़ी जिम्मेदारी होती है। क्योंकि आधुनिक दुनिया की पारिवारिक संरचना ने मातृत्व को एक अलग तरीके से महत्व दिया है। एक माँ का प्यार सिर्फ एक घरेलू व्यवसाय है। कुछ नारीवादियों का तर्क है कि परिवर्तन इस रूप में होना चाहिए। कुछ महिला चिंतक, जो मातृत्व पर जोर देने वाले पुरुष समाज की निंदा करते हैं और महिलाओं को उनके दोषों की परवाह किए बिना हिरासत में रखते हैं, तर्क देते हैं कि यह गर्भ धारण करने और जाने देने का उनका अधिकार है। लेकिन पुरुष, भले ही उन्होंने परिवार में स्वामित्व स्थापित कर लिया हो, अत्यधिक दबावों का सामना करने और पलायनवादी बनने में असमर्थ हैं। ऐसे में उनकी पत्नियां पूरे परिवार की जिम्मेदारी लेती हैं और उनके जीवन का प्रबंधन करती हैं। महाश्वेता देवी सबसे महत्वपूर्ण बारीकियों पर प्रकाश डालती हैं: पुरुषों का इश्कबाज स्वभाव और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति महिलाओं का साहसी रवैया। ये उनके साहित्य के मुख्य स्रोत हैं। यशोदा का चरित्र, जो स्तनपान कराने वाली महिला की कहानी की शुरुआत में आता है, महिलाओं पर पुरुष प्रधान समाज के शोषण का दर्पण है। वह बिना किसी भावना के एक मशीन की तरह दिखती है। राजपूत संस्कृति में, अमीर परिवारों की महिलाएं अपने नवजात शिशुओं को इस विचार के कारण स्तनपान नहीं कराती थीं कि स्तनपान से उनकी सुंदरता और स्वास्थ्य को नुकसान होगा। इसके बजाय, उन्होंने अन्य सरोगेट माताओं को पैसे दिए और अपने बच्चों को दूध पिलाया। इन कारणों से, नायिका कंगालीचरण की पत्नी यशोदा का उनके पति द्वारा लगातार यौन शोषण किया जाता था। पति ने कंगाली को न केवल आनंद की वस्तु के रूप में बल्कि बच्चे पैदा करने के लिए एक मानव मशीन के रूप में भी माना। वह स्वार्थी समाज जो एक महिला को आवारा कुत्ते से भी बदतर देखता है और एक कौवे को कूड़ेदान में देखता है, यहाँ बेनकाब हो जाता है।[6] परिस्थितियाँ जो उसे उन लोगों को बुलाने के लिए प्रेरित करती हैं जो उसके शरीर का यौन उत्पीड़न करते हैं, उसकी वित्तीय असहायता को दर्शाती हैं। जब इस तरह के अन्याय एक ऐसे घर में होते हैं जहां प्रथागत पंचांग सोलहवीं शताब्दी में वापस जाते हैं, तो महिला की स्थिति लेखक के लिए एक सवाल बनी रहती है।

जब खाद्य चोर कंगालीचरण की दयनीय आर्थिक स्थिति सामने आती है, तो उसके द्वारा तैयार किए गए व्यंजनों की सराहना करने में ब्राह्मणों की मूर्खता का एहसास होता है। हल्दर का बेटा कंगालीचरण की शॉल पर घोड़े पर सवार... उस समय की घटनाएं कई भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण दिखाती हैं। हलदर बाबू के घर से योशदा को भोजन मिलने के बारे में उसका संदेह कंगालीचरण के रवैये को दर्शाता है।

लेखक ने एक ऐसा परिदृश्य बनाया है जिसमें एक आर्थिक रूप से संपन्न मालिक अपनी कुर्सी पर बैठता है और एक स्तनादायिनी की उपाधि के अनुरूप छह महीने के बच्चे को अपनी गोद में रखता है। साल के लगभग हर महीने एक महिला गर्भवती होती है। इसलिए, घर के भूतल पर कमरे खाली नहीं होंगे। महिला डॉक्टर और दाई सरला घर से बाहर नहीं निकलीं। गलीचा, बिस्तर, बाल कटवाने, चम्मच, बोतल, तेल, कपड़ा, पाउडर, बाथटब और पानी के एक निरंतर चक्र का वर्णन, सभी उत्पीड़ितों के उत्पीड़न और गरीबों के शोषण को उजागर करने का काम करते हैं। उनके जीवन में सभी उतार–चढ़ाव के बावजूद, उनके पति और समाज के साथ एक क्रूर त्रासदी ने उनका पूरा जीवन स्तन कैंसर के रूप में नष्ट कर दिया।

अपने पति द्वारा शोषित महिला का जीवन अमीरों द्वारा गरीबों के शोषण से भी बदतर है। लेखक ने एक ऐसे क्रूर समाज की तस्वीर बनाई है जिसमें एक दूध देने वाली गाय का अंत तक इस्तेमाल किया जाता है और क्रूरता मनुष्यों में भी उतनी ही देखी जाती है जितनी अंत में।

फिर से इंजेक्शन, फिर से नींद, फिर से यह भयानक दर्दनाक कैंसर इस तथ्य के बावजूद फैल रहा है कि यह पूरी मानव जाति की स्तन ग्रंथि है। अंत में, यशोदा की बाईं आंख टूट गई। गुफा की बदबू करीब आना असंभव बना देती है, जिससे दिल की धड़कन कम हो जाती है।

इस मामले के बारे में पता चलने पर राजपूत लोगों ने कुछ पैसे दिए और उसे छीन लिया। लेकिन उसके पति, जो लगातार यौन शोषण से पैसे कमा रहे थे, के पास अस्पताल जाने और उसे देखने का शिष्टाचार नहीं था जब उन्हें पता चला कि उसे कैंसर है।

उनका मानना था कि भगवान की रचना में बाकी सभी लोग उनके जैसे चलते थे। मृत्यु ईश्वर की मृत्यु है। अगर केवल मनुष्य इस दुनिया में भगवान की तरह रहते, तो वह किसी को नहीं चाहती। अगर उसे अकेले मरना है, तो यह कहानी समाज के स्वार्थ का आईना है।

उच्चतम अर्थों में, महाश्वेता देवी उनके साहित्य का स्त्री तत्व हैं। वह मर्दाना मूल्यों को मूर्त रूप देने में भी सक्षम है। प्रगतिशील विचारक ऐसी महिला को एक तीव्र व्यक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं जो पुरुष वर्चस्व के शिकार बन जाती है। इस तरह के महिला समर्थक लेखन में महाश्वेता देवी के विचारों की अभिव्यक्ति ज्ञान का आधार बनाती है।

जब कोई महाश्वेता देवी के ग्रंथों के बारे में सोचता है, तो स्तनपान कराने वाली महिला की कहानी तुरंत दिमाग में आती

है। वास्तव में, वे लैंगिक असमानता के दार्शनिक ढांचे को वस्तुतः अनुभवजन्य डेटा के रूप में देखते हैं। यद्यपि नर और मादा को प्रकृति और पुरुष के रूप में वर्णित किया गया है, स्तनधारी को यशोदा की कहानी को उसके शरीर के अंतर्संबंध और उसे आकार देने वाली संस्कृति के साथ स्थापित करने के रूप में देखा जाता है।

इस कहानी में एक बहुत ही दुखद विरोधाभास भी है जो प्रकृति और मनुष्य को जोड़ता है। महिला के खिलाफ नसबंदी और शरीर रचना का विरोधाभास डिजाइन में अलग नहीं है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि स्त्री की भावना आवश्यकता और अनुष्ठान की सांस्कृतिक सोच में अंतर्निहित है। एक लड़की कुत्ते की तरह रहती है।

अगर वह अपनी जान भी खो देती है, तो भी वह उसे नहीं दिखाएगी। महिला ने खुद को अंदर जलाया...

इस तरह के शब्द जैसे 'हम उसकी प्रशंसा तभी करेंगे जब धूल फैल जाएगी'[6] को यशोध जैसे किसी व्यक्ति ने कहा होगा। क्योंकि, हालाँकि वह बाबू के घर की बहू या बेटियों की तरह माँ नहीं हैं, जो पेशे से माँ हैं, उनका मातृ स्नेह इतना अधिक है कि वह अपने पति कंगालीचरण को अपने बच्चों को देखते हुए देख सकती हैं। वह खुद एक पृथ्वी देवी बनने, अमीर बनने और अपने विकलांग पति और बच्चों को खिलाने की उम्मीद करती है। उनमें इस तरह की मातृभाषा भारत की इस भूमि के लिए अद्वितीय है, और यह बहुत गौरवशाली है।

यहाँ पैदा होने वाली सभी स्त्रियाँ माताएँ बन जाती हैं, और यहाँ पैदा होने वाले सभी पुरुष सबसे पवित्र शैशवावस्था में डूबे हुए हैं, हर पुरुष ईश्वर की संतान है, हर स्त्री ईश्वर की माता है। इस प्रकार महाश्वेता देवी सांस्कृतिक उदाहरणों को सूक्ष्मता के साथ समग्रता (अखंडता) के दृष्टिकोण से दिलचस्प बनाती हैं। कहानी में, स्थानदैनी व्यक्त करती है कि कैसे एक व्यक्ति का रवैया, कर्तव्य, आवश्यकता, अधिकार, यौन संबंधों की प्रकृति, पुरुषों और महिलाओं के लिए जीवन का अवसर, और गुलामी का आनंद सभी एक सत्तावादी संस्कृति में निर्देशित होते हैं।

इतना ही नहीं, यशोदा के मामले में सांस्कृतिक कॉस्मोपॉलिटनवाद की भावना है जो जीवन की परिस्थितियों से दृढ़ता से आकार लेती है, i.e., सांस्कृतिक संवेदनशीलता खुद को महिलाओं की ओर से सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और जैविक ताकतों के एक स्पष्ट क्रूर बंधन के रूप में प्रकट करती है, उत्पादन के साधन के रूप में अपने शरीर का उपयोग करने की बाधा के बिना मां बनने की चरम दुविधा, अपने परिवार के निर्वाह के लिए हल्दर बाबू के एक समृद्ध परिवार में स्तनपान कराने वाली नर्स के रूप में काम करना। अच्छा भगवान आ रहा है! उसे थोड़ा दूध देने के लिए, अब उसकी माँ को एक बीमारी है–एक अच्छी स्वभाव की लड़की, उसने बोतल को नहीं छुआ है। बच्चे को राहत मिली, गुरु ने जोर देकर यशोदा को रात के नौ बजे तक रखा। यशोदा ने मालकिन के पोते को बार–बार खाना खिलाया... जैसे ही मालकिन ने बात की, यशोदा ने कहा, "अम्मा, मालिक ने कुछ वादे किए थे, लेकिन वे नहीं गए। लेकिन माँ, आपके उस ब्राह्मण पुत्र ने अपने दोनों पैर खो दिए। मुझे चिंता करने की कोई बात नहीं है, लेकिन मेरे पति और मेरे बच्चे, उनके चेहरे देखें और मुझे कुछ करने दें। यशोदा की असहायता पर जोर देने का विश्लेषण किया जाता है।

जीवन की कठोर वास्तविकताएँ यहाँ इतनी स्पष्ट नहीं हैं। अर्थात्, महाश्वेता की ऐसी कहानियों में, यह स्थिति है कि जीवन की आवश्यक स्थिति आसानी से उपलब्ध नहीं है। इसी तरह, स्थानदैनी की कहानी के इन शब्दों में यह देखा जा सकता है कि वह अपने शरीर को जीवन और पोषण के स्रोत, एक दृष्टि और भौतिक जीवन के साधन के रूप में देखती है, जिसका सामना जीवन को एक ऊर्जा के रूप में किया जाता है, न कि पोषण के साधन के रूप में। "इन बच्चों को मत छोड़िए! उसे कुछ खाना, त्योहार के लिए कपड़े और एक महीने के पैसे दें।

वह सोच रही थी कि उसके बालों की कीमत कितनी है... मैं अपना सारा बोझ अपने ऊपर से उतार दूँगा। यह कितना विश्वसनीय है? यही कारण है कि महाश्वेता के लेखन अफसोस से भरे हुए हैं। यह नारीवाद का एक और रूप है। शासकों की मानसिकता और शासकों की सांस्कृतिक संरचना की गुणवत्ता यहाँ की मुख्य बात है। फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि महाश्वेता का लेखन अचेतन और चेतन की दुविधा के पीछे की पाठ्य विडंबना का सामना करता है।[8]

श्री सत्य जैसी प्रथाओं में, वर्तमान सामाजिक जीवन को इसके संदर्भ में देखा जाता है। अनादिकाल से आज तक, महिलाओं और पुरुषों पर समाज के ऐसे दायित्वों पर जोर दिया गया है। वे शक्ति की प्रतीक थीं। उपरोक्त पंक्तियों को विशेष शब्दों के रूप में श्रेय दिया जाता है कि उनका स्वार्थ दूसरी मंजिल पर पूरा होगा।

फिर भी, शक्ति की प्रकृति की खोज को आज दर्शन के सबसे अच्छे उपकरण के रूप में पहचाना जाता है, लेकिन मूर्खता, कामुकता, मानव शक्ति की सकल अनैतिकता को पाठक द्वारा सार्वभौमिक रूप से नोट किया जा सकता है। इस तरह के स्वभाव और इस तथ्य के बीच अंतर करने के लिए महाश्वेता के लेखन में तल्लीन होने की कोई आवश्यकता नहीं है कि यह एक महत्वपूर्ण है। क्योंकि महाश्वेता देवी पुनः सशक्तीकरण के अंत में कमजोर पड़ने को एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आदर्श के रूप में देखती हैं।

हालाँकि, राजनीतिक विचार जो विपरीत दिशा की ओर इशारा करते हैं, वे भी आधिकारिक मुख्यधारा को मानसिक चिकित्सक से अलग करते हैं। अर्थात्, एंटोनियो ग्रामसी और मिशेल फौकॉल्ट द्वारा समर्थित शक्ति–नियंत्रित ध्यान, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, महाश्वेता की कहानियों में पाया जाता है। यहाँ बताया गया है कि आप खेल कैसे खेलते हैं। और आप सो नहीं पाएँगे। मुझे नहीं लगता कि मेरा पैर टूटा था। जैसे ही एक तैयार होता है, दूसरा तैयार हो जाता है। तब स्वामी के घर के बच्चे अब आश्चर्य करते हैं कि यह मेरे लिए कैसा था।[10] ये शब्द व्यावहारिक सत्य के दृष्टांत साबित होते हैं।

अर्थात् सुंदरता, कुरूपता, शक्ति, कमजोरी, अच्छाई और बुराई, शक्ति और अधीनता, सत्य और झूठ, ये सभी बातें यशोदा के शब्दों में शक्ति की विचित्र नींव को हिलाती हैं। वे शक्ति की आत्म–विनाशकारी चिंताओं और उसके सामने आने वाली अधीरता को दर्शाते हैं।

महाश्वेता के लेखन में शक्ति को हिंसा के सबसे बड़े स्रोत के रूप में देखा गया है। तीव्र चिंता के बीच परिवर्तनकारी शक्ति में इसका पूरा विश्वास है। यही कारण है कि महाश्वेता के लेखन अफसोस से भरे हुए हैं। यह नारीवाद का एक और रूप है। शासकों की मानसिकता और शासकों की सांस्कृतिक संरचना की गुणवत्ता यहाँ की मुख्य बात है। फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि महाश्वेता का लेखन अचेतन और चेतन की दुविधा के पीछे की पाठ्य विडंबना का सामना करता है।

चर्चा

महाश्वेता देवी का "स्तनदायिनी" भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक संरचना और स्त्री की सामाजिक उपयोगिता पर एक गहन विमर्श प्रस्तुत करता है। इस कहानी की नायिका जशोदा उस समाज का प्रतीक है जहाँ स्त्री का अस्तित्व केवल उसकी देह और मातृत्व तक सीमित कर दिया गया है। लेखिका ने जशोदा के माध्यम से यह दिखाया है कि कैसे समाज स्त्री को "देने वाली" के रूप में पूजता है, परंतु जब उसका शरीर थक जाता है या अनुपयोगी हो जाता है, तो वही समाज उसे त्याग देता है।

कहानी में "स्तन" केवल जैविक अंग नहीं है, बल्कि त्याग, श्रम और स्त्री की पहचान का प्रतीक है। जशोदा ने अपने शरीर को दूसरों के पोषण के लिए समर्पित किया, परंतु जब उसे स्वयं पोषण की आवश्यकता हुई, तो वह उपेक्षित रह गई। यह विडंबना भारतीय सामाजिक संरचना की गहरी सच्चाई को उजागर करती है — जहाँ मातृत्व को पूजनीय माना जाता है, पर माताओं को सुरक्षा या सम्मान नहीं दिया जाता।

महाश्वेता देवी ने "स्तनदायिनी" में वर्गीय और आर्थिक असमानता का भी यथार्थ चित्रण किया है। जशोदा जैसे पात्र उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो दूसरों की सुख–सुविधा के लिए श्रम करता है, परंतु अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है। यह कथा पूंजीवादी समाज की उस नैतिक विडंबना को सामने लाती है जहाँ मनुष्य को उसकी उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकित किया जाता है।

कहानी के अंत में जशोदा का कैंसर से पीड़ित होना केवल शारीरिक रोग नहीं, बल्कि सामाजिक रोग का प्रतीक है। उसका शरीर उस व्यवस्था का दस्तावेज बन जाता है जिसने उसे 'माँ' के रूप में सम्मान दिया, पर 'स्त्री' के रूप में कभी स्वीकृति नहीं। यह स्थिति नारीवाद के उस मूल प्रश्न को सामने लाती है — "क्या स्त्री का अस्तित्व केवल दूसरों के लिए है, या स्वयं के लिए भी?"

महाश्वेता देवी की यह रचना केवल नारी पीड़ा की कथा नहीं, बल्कि प्रतिरोध और जागृति की चेतना भी है। लेखिका ने स्त्री को दया की पात्र नहीं, बल्कि समाज की संरचना को चुनौती देने वाली चेतन शक्ति के रूप में चित्रित किया है। जशोदा का संघर्ष यह दर्शाता है कि स्त्री अपने श्रम और मातृत्व के माध्यम से इतिहास में अपनी पहचान अंकित कर सकती है।

इस प्रकार, "स्तनदायिनी" की चर्चा केवल एक कथा की व्याख्या नहीं, बल्कि यह भारतीय समाज, वर्ग, धर्म और स्त्री–श्रम के अंतर्संबंधों का दार्शनिक विश्लेषण बन जाती है। महाश्वेता देवी ने जिस गहराई और प्रामाणिकता से इस कहानी को लिखा, वह इसे विश्व साहित्य में एक महत्वपूर्ण सामाजिक–नारीवादी दस्तावेज का रूप देती है।

निष्कर्ष

महाश्वेता देवी का "स्तनदायिनी" भारतीय समाज की नैतिक और मानवीय असमानताओं का शक्तिशाली दस्तावेज है। यह कहानी हमें बताती है कि स्त्री केवल देह नहीं, बल्कि चेतना और संघर्ष का प्रतीक है। जशोदा का चरित्र यह प्रश्न उठाता है — "क्या मातृत्व केवल दूसरों के सुख के लिए है, या स्त्री के अपने अस्तित्व के लिए भी?"

इस प्रश्न में ही महाश्वेता देवी का नारीवादी और मानवीय दृष्टिकोण निहित है।

अंतिम टिप्पणी

1. कन्नड़ में तारिणी शुभदयिनी, महाश्वेता देवी (कॉलम लेखन) पीः 01
2. फ्रायड सिगमंड, 1938, पृ. 597–98: केशव शर्मा के द्वारा उद्धृत।
3. तेजस्विनी निरंजन, सीमंथिनी निरंजन, फेमिनिस्ट लिटरेरी रिव्यू, पी।
4. राजेंद्र तगडली से उद्धृत, शिवराम कारंत के उपन्यास द नेचर ऑफ द फीमेल कॉन्टेक्स्ट, पीपी। 175
5. केशव शर्मा के, द प्रोसेस ऑफ एक्शन, पृः 4
6. श्रीमती H-S- महाश्वेता देवी की कहानी, भाग 2, पृः 44,14:45, प्रगति ग्राफिक्स, बैंगलोर–2011
7. श्रीमती H-S- महाश्वेता देवी की कहानी, भाग 2, पृ. 46–47 प्रगति ग्राफिक्स, बैंगलोर–2011
8. श्रीमती H-S- महाश्वेता देवी का उपन्यास भाग–2, पृः 44,14, पृः 46–47, प्रगति ग्राफिक्स, बैंगलोर–2011
9. श्रीमती H-S- महाश्वेता देवी का उपन्यास भाग–2, पृः 44,14 पृः 48–49, प्रगति ग्राफिक्स, बैंगलोर–2011
10. श्रीमती H-S- महाश्वेता देवी की कहानी, भाग 2, पृ. प्रगति ग्राफिक्स, बैंगलोर–2011

संदर्भ सूची

1. महाश्वेता देवी, स्तनदायिनी, संग्रहः "भारतीय कहानियाँ", प्रकाशनः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985।
2. Spivak, Gayatri Chakravorty. *Breast-Giver (Translation of Stanadayini)*, Calcutta: Seagull Books, 1997.
3. Bose, Brinda. Feminism and Indian Writing in English, Oxford University Press, 2005.
4. Nandy, Ashis. The Intimate Enemy: Loss and Recovery of Self under Colonialism, Oxford India, 2010.
5. WHO Report on Gender and Labour, Geneva, 2019.